RESEARCH PAPER | Literature | Volume : 4 | Issue : 3 | Mar 2014 | ISSN - 2249-555X

हरियाणा में जैन मूर्तियाँ
Hariyana Me Jain Moortiya

KEYWORDS

DR ANUBHA JAIN

persuing D.lit, YAMUNANAGAR - 135001, HARYANA

हरियाणा के विभिन्न पुरातत्त्व स्थानों पर हुई प्राचीन जैन षिल्प की खोज यमुना के पष्चिमी क्षेत्रा में प्रसारित एवं विकसित होते हुए जैन धर्म पर एक स्वागतपूर्ण प्रकाष डालती है। आगमों से हमें ज्ञात होता है कि स्थूणा ;आधुनिक थानेसरद्ध आर्यदेष की पष्चिमी सीमा थी और इस क्षेत्रा में जैन साधुओं को महावीर के द्वारा बहुमूल्य वस्त्रा पहनने की आज्ञा प्राप्त थी। यह तथ्य जैन धर्म की धन वैभवता को दर्षाता है, जहाँ जैन साधुओं को उनके भक्तों के द्वारा बहुमूल्य वस्त्रा दिए जाते थे। बाद की षताब्दियों में यह क्षेत्रा जैन धर्म से बिल्कुल प्रभावित हो गया। बाणभट्ट ने स्वरचित हर्शचरित में मोरपंख को साथ लेकर चलने वाले जैन साधुओं के कतिपय उदाहरण दिए। आगे चलकर 779 ।क में उद्योतना द्वारा रचित कुवल्यमालाकहा ने जैन लोगों की क्रियाओं पर प्रकाष डाला। इस ग्रन्थ के पव्वइये के अनुसार यवन राजा तोरमणा की राजधनी, जो चंद्रभंगा के किनारे पर स्थित थी, में एक आध्यात्मिक विचारक – हरिगुप्त निवास करता था, जिसके षिश्य राजस्थान एवं गुजरात में जैन धर्म का प्रचार करते थे। चन्द्रभंगा ;चेनाब नदीद्ध के निकट स्थित एक जैन धर्म का केन्द्र यह दर्षाता है कि कैसे हरियाणा का यह क्षेत्रा जैन धर्म के प्रभाशाधीनस्थ हुआ। इस क्षेत्रा में जैन धर्म के प्रभाव का होना इस तथ्य से तर्कसंगत प्रतीत होता है कि जिनवल्लभ सूरि, अभयदेव सूरि के एक षिश्य आसिका ;आधुनिक हांसी, हरियाणाद्ध में निवास करते थे। वह एक सषक्त व्यक्तित्व का स्वामी था। उसने एक नए सि(ान्त, विधि–मार्ग का आरम्भ किया। उसने मठ, बगीचों एवं मन्दिरों की सम्पत्ति का अधिकार त्याग दिया और अपना जीवन धर्म एवं आस्था के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया।

आंकड़ो से प्राप्त 9जी और 12जी षताब्दी ।क की मूर्तियाँ हरियाणा के जींद, सिरसा, अटा, सांधि, आस्थल बोहर, घरौंडा, थानेसर और पिंजौर से प्राप्त हुई। हिसार, अम्बाला और कूछ अन्य स्थानों से भी बाद के समय की जैन मूर्तियाँ मिलीं जो इस षोध के विशय में आन्तर्निहित नहीं की गई है।

जींद से प्राप्त एक प्रतिमा में तीर्थघकर अपनी अतिरिक्त दैवीय षक्तियों के साथ सिंहासन पर ध्यानमुद्रा में विराजमान ;बैठे हुएद्ध हैं। एक त्रिरेखीय षिलालेख, जो प्राचीन लेख के अनुसार नवीं षताब्दी ।क की अनुमानित है और पाद पर खड़ी मुद्रा में है आदिनाथ की प्रतिमा की संस्थापना की ओर संकेत करती है। यह काल बसाल्ट ;ज्वालामुखी से बना हुआ एकद्ध पत्थर खड़ी अवस्था में जिन प्रतिमा के बनाए जाने के लिए उल्लिखित है। इस काल में एक स्त्राी–दैवी की अर्धेविच्छेदित मूर्ति प्राप्त हुई है जिसके एक तरफ़फ ध् र्मच्रक, बीच में हिरण और दूसरी तरफ़फ सिंह अंकित है। इसके अतिरिक्त 10 चतुर्बाहु वाली स्त्राी–मूर्तियाँ एक आड़ी रेखा में प्राप्त हुई है जो बुरी तरह से अर्धेविच्छेदित है और अब उन्हें पहचानना भी अत्यन्त कठिन है।

दो छोटी प्रतिमाएँ सिरसा से प्राप्त हुई जिनमें से एक स्वतन्त्रा प्रतिमा में जिन ध्यानस्थ मुद्रा में है जबकि दूसरी प्रतिमा में जिन ;बैठी इुई अवस्थाद्ध विराजमान है तथा दो और मूर्तियाँ धेती पहने हुए कायोत्सर्ग अवस्था में उनके साथ खड़ी हैं। यह ष्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। अटा ;जिला गुडगाँवद्ध से तीर्थघङ्कर की बैठी मुद्रा में एक प्रतिमा प्राप्त हुई और उस मुख्य प्रतिमा के साथ एक तरफ़फ गणेष की छवि ;मूर्तिद्ध भी है। यह तथ्य जैन देवतागणों में ब्राह्मण देवों की स्वीकारिता को सूचित करता है जो निषचित रूप से तीर्थघङ्कर के अधीनस्थ ;या संरक्षक के रूप मेंद्ध थे। फ़िफरोजपुर झिरका ;जिला गुड़गाँवद्ध के पास भींवा से एक मनोरंजक षीर्शरहित छवि प्राप्त हुई है, जो ष्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। इसमें तीर्थघङ्कर ने धेती पहनी हुई है जो कमरपेटी से बांधी हुई है। रोहतक के पास आस्थल बोहर में नाथ मठ में तीन जैन प्रतिमाएँ रखी हुई हैं जिन पर अत्यधिक षानदार एवं सूक्ष्म रूप से जानकारी ;वर्णनद्ध गुढ़ी हुई है। ये छवि षांतिनाथ एवं पार्ष्वनाथ को सूचित करती है ;चसण टप्प्ए 11ए 12द्ध तथा उनके लक्षणों एवं सास्ना देवताओं के आधर पर सरलता से पहचानने योग्य है। सांधी गाँव से जिन छवि का मात्रा षीर्श प्राप्त हुआ है। एक चतुर्मुखी सवितो – भद्रिका का एक मात्रा उदाहरण घरोंडा ;करनाल जिलाद्ध से प्राप्त हुआ है, जो आदिनाथ, पार्ष्वनाथ, नेमिनाथ और महावीर को क्रमषः उनके लक्षणों के साथ वृशभ, सर्प, षंख एवं सिंह के साथ सूचित करती है। एक जिन का षीर्श थानेसर से ;प्राचीन स्थानविष्वराद्ध प्राप्त हुआ है, यह स्थान ब्राह्मण धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है, यह तथ्य 10वीं और 11वीं ।क के दौरान जैन मन्दिरों के अस्तित्व को सूचित करता है।

चण्डीगढ़ से उत्तर–पूर्वी दिषा की ओर 10 कि॰मी॰ की दूरी पर तथा षिवालिक की पहाड़ियों की तलहटी में बसे हुए पिंजौर ;प्राचीन पंचपूरद्ध के षानदार षिल्पकला रूपी धन को भी इसमें सम्मिलित किया जा सकता है। पृथ्वी पर पड़े हुए अथवा दीवारों पर अलंकृत अधिक संख्या में टूटे हुए षिल्प के नमूने और पुरातत्व भग्नावषेश कथा वर्णित करते हुए से प्रतीत होते है जिनके क्रूर एवं हिंसा युक्त लालची प्रषासक के हाथों यह प्राचीन मन्दिर बुरी तरह भग्न हुआ था। दोनों ब्राह्मण एवं जैन मन्दिर साथ–2 विद्यमान हैं। 120 मूर्तियाँ पुरातत्त्व म्यूजियम, कुरुक्षेत्रा विष्वविद्यालय में अब रखी गई है। जिनमें से 13 जैन धर्म से सम्बन्धित हैं। जो छवियाँ विषेश तौर से पहचान ली गई है वे आदिनाथ और नेमिनाय की है। आदिनाथ की प्रतिमा उनके लक्षण वृशभ की सहायता से पहचानी गई है। इस प्रतिमा ;बबण दवण 14द्ध में उनके कन्धें पर लम्बे घुंघराले बाल ;चसण टप्प्ए 13 चसण प्प्ए 15द्ध पड़े हुए हैं। एक छवि में यक्षी अम्बिका एवं यक्ष गोमेघा की विद्यमानता ;बबण दवण 72ए 18द्ध हमें यह पहचानने में सहायता करती है कि यह छवि 22वें तीर्थघङ्कर, नेमिनाय की है। पिंजौर से 4 मूर्तियाँ ष्वेत मारबल में प्राप्त हुई हैं। उनमें से दो मूर्तियों पर संस्कृत लेख प्राप्त हुआ है। उसमें पण्डित सोमाकीर्ति ;बबण दवण 72ण्22द्ध तथा सूर्याकीर्ति ;बबण दवण 72ण्21द्ध का उल्लेख है जो षायद इन छवियों को देने वाले होंगे। कला कृति के ढंग एवं साधन ;ष्वेत मारबल का प्रयोगद्ध से ज्ञात होता है कि यह राजस्थान से आयात हुआ होगा ;चसण प्प्ए 14य चसणए16ए17द्ध। ये सभी मूर्तियाँ दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। ष्वेताम्बर सम्प्रदाय के प्रमाण अत्यधिक क्षीण मात्राा में उपलब्ध हैं। मात्रा टोरसों वस्त्रा 'धेती' में ही प्रमाण ;पिहण वद च्119द्ध प्राप्त है। आदिनाथ की तीन प्रतिमाएँ दो अंकित ष्वेत मारबल की प्रतिमाएँ, ष्वेताम्बर सम्प्रदाय की मूर्तियों की प्राप्ति ये सब इस तथ्य को सूचित करती हैं कि पिंजौर में लगभग 5 या 6 जैन मन्दिरों ;या संत समाधियोंद्ध का अस्तित्व रहा है। परन्तु अब कोई भी मन्दिर इस तथ्य को उजागर करने के लिए षेश नहीं है।

1982 में हांसी में एक विषाल तांबे के जार की खोज, जिसमें बहुत सी जैन ताँबे की छवियाँ तथा यज्ञ सम्बन्धी वस्तुओं के भाग्नावषेश पुराने किले से प्राप्त हुए हैं, यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। जली हुई वस्तुओं को देखकर अनुमानित होता है कि इस धर्मिक केन्द्र पर अवष्य कोई खतरा होगा। इस समय इन प्राचीन वस्तुओं का संग्रह हरियाणा पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग, चण्डीगढ़ में सुरक्षित है। ताँबे की मूर्तियाँ ध्यानस्थ जैन तीर्थघङ्कर को वर्णित करती हैं और उनके साथ गौण देवी–देवता यक्ष एवं यक्षिणी भी है। अधिकतर दषाओं ;मुद्राओंद्ध में तीर्थघङ्कर प्रतिमाएँ त्रि–तिर्थिका रूप में दिखाई देती हैं। एक मुख्य प्रतिमा के साथ दो अन्य जैन छवियाँ धेती को धरण किए हुए है। इस संग्रह में कायोत्सर्ग मुद्रा में कतिपय मूर्तियाँ खड़ी हुई मुद्रा में भी हैं। ये प्रतिमाएँ साधरण अथवा अलंकृत प्रभावमण्डल और कमल के पुश्प पर स्थित हैं। इस संग्रह में कतिपय मूर्तियाँ पार्ष्वनाथ, 23वें तीर्थघङ्कर की सरलता से पहचानी जा सकती हैं, जो सर्पपता के नीचे विराजमान है। कुछ स्वतन्त्रा मूर्तियाँ कुबेर एवं सरस्वती की है, एक पुश्प एवं पुस्तक हाथ के लिए हुए। इन मूर्तियों पर रासायनिक प्रभाव इनके सही अभिज्ञान के लिए सहायक होता। एक ताँबे के आधर पर जैन प्रतिमा स्थित है और उसके चारों तरफ़फ स्तूप के स्थान पर सर्वतोभाद्रिका की मूर्तियाँ स्थित हैं।

कुछ दषाओं में बीच में खाली चतुर्भुजीय स्थान षायद पुश्प या अगरबत्ती रखने के लिए रहा होगा। यह प्राचीन जैन मूर्तियों का संग्रह जो 10जी . 11जी षताब्दी ।क में बहुत षानदार तरीके से बनाया गया, ष्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बन्धित है।